प्रसंगशः

आलोक मेहता

स्वयंसेवक के संस्कार और सत्ता

डॉ. हेडगेवार की जयकार मात्र से कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो सकती

एक लंबे अर्से के बाद 7 अप्रैल को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक कुप्.सी. सुदर्शन, मामूली स्वयंसेवक से देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी तक सार्वजनिक रूप से एक साथ संघ को लेकर रही गलतफहमियों को दूर करने के साथ संगठन के आदर्शों और संस्कारों पर गौरव करते दिखाई दिए। अवसर था- संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के व्यक्तित्व और कृतित्व पर राकेश सिन्हा की शोधपरक पुस्तक के लोकार्पण का। राजनीतिक विश्लेषक, स्तंभकार तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के एक कॉलेज में राजनीतिशास्त्र के प्राध्यापक राकेश सिन्हा ने डॉ. हेडगेवार पर लगभग दस वर्षों तक शोध कार्य किया और स्वयं प्रधानमंत्री वाजपेयी ने स्वीकारा कि उनके जैसे हजारों निष्ठावान स्वयंसेवकों को इस पुस्तक में वर्णित कई महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी नहीं थी। राकेश सिन्हा के इस तर्क को संघ और शीर्षस्थ नेताओं ने भी माना कि संघ के खिलाफ होने वाले कुप्रचार से केवल भावनात्मक आधार पर नहीं लड़ा जा सकता है और उसके लिए समुचित तर्क और तथ्य होने चाहिए। निश्चित रूप से यह इरादा अधिक प्रजातांत्रिक और सकारात्मक है। पुस्तक को आधिकारिक मान्यता देने के लिए सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग ने आधुनिक भारत के निर्माता शृंखला में इसे प्रकाशित किया है। लोकार्पण समारोह में राकेश सिन्हा के महत्वपूर्ण शोध कार्य की सराहना और डॉ. हेडगेवार के जीवन मूल्यों, संघ स्थापना के उद्देश्य, स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी और कांग्रेस के साथ संबंधों का उल्लेख होने पर विज्ञान भवन में तालियां गूंजने मात्र से क्या डॉ. हेडगेवार के प्रति सम्मान व्यक्त करने का कर्तव्य पूरा माना जा सकता है? डॉ. हेडगेवार के कार्यों और विचारों के विस्तृत रूप में सामने आने के बाद संगठन और सत्ता से जुड़े नेताओं तथा स्वयंसेवकों को क्या यह आत्मसंथन नहीं करना चाहिए कि वे उन आदर्शों की कसौटी पर कितने खरे उतरते हैं?

प्रधानमंत्री वाजपेयी ने पुस्तक लोकार्पण समारोह में डॉ. हेडगेवार और महात्मा गांधी के संपर्क संबंधी अध्याय को महत्वपूर्ण निरूपित किया है। राकेश सिन्हा ने इस भाग में 25 दिसंबर, 1934 को दिल्ली में महात्मा गांधी के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शिविर में जाने की घटना का विस्तृत विवरण दिया है। इसमें बताया गया कि शिविर में गांधीजी को तब और भी आश्चर्य मिश्रित खुशी हुई कि ब्राह्मण, गैर ब्राह्मण एवं तथाकथित अछूत (महार) सभी जातियों के स्वयंसेवक साथ-साथ रहते, खाते और खेलते थे। एक स्वयंसेवक ने उनसे कहा कि 'हम न तो किसी की जाति जानते हैं और न ही जानने की इच्छा रखते हैं। हमारी तो एक ही जाति है, वह है हिंदू।' इसी तरह जब गांधीजी ने डॉ. हेडगेवार से पूछा कि 'आपकी स्वयंसेवकों की क्या अवधारणा है?' तब डॉ. हेडगेवार ने उत्तर दिया, 'संगठन में नेता और कार्यकर्ता ये दो ही वर्ग होने चाहिए, संघ में सभी स्वयंसेवक हैं।' गांधीजी ने पूछा, 'कल मैंने विभिन्न जातियों के स्वयंसेवकों को साथ-साथ काम करते देखा। यह सब आपने कैसे कर दिखाया?' तब डॉ. हेडगेवार ने उत्तर दिया, 'उनकी चेतना में राष्ट्रीयता का भाव एवं हिंदू होने का अभिमान जाग्रत करने के कारण वे सभी संकीर्णताओं से ऊपर उठ गए हैं।' डॉ. हेडगेवार ने 1919 में राष्ट्रीय उत्सव मंडल की स्थापना भी की। उनका उद्देश्य था, 'लोगों में देशभक्ति की भावना जाग्रत करके उन्हें जातीय एवं संप्रदायों की चेतना से ऊपर उठाना।'

डॉ. हेडगेवार की जीवनी का लोकार्पण

प्रश्न यह है कि डॉ. हेडगेवार को आदर्श राष्ट्रीय निर्माता के रूप में प्रातः स्मरणीय मानने वाले स्वयंसेवक क्या आज भारतीय राजनीति में जातीय एवं सांप्रदायिक संकीर्णताओं को बढ़ावा नहीं दे रहे हैं? यदि कांग्रेस महात्मा गांधी के आदर्शों को तिलांजलि देकर जातीय समीकरणों पर राजनीति करने लगी तो क्या संघ की पृष्ठभूमि वाले स्वयंसेवकों की भारतीय जनता पार्टी हर प्रदेश में संकीर्ण जातीय और सांप्रदायिक आधार पर राजनीति नहीं कर रही है? केवल साथ बैठकर खाना खाने के दिखावे मात्र से उदारता का दावा नहीं किया जा सकता। बंगारू लक्ष्मण या मायावती को भाजपा ने इसलिए सिर पर नहीं बैठाया कि उनमें नेतृत्व की अद्भुत क्षमता है, वरन इसलिए स्वीकारा कि उन्हें सिद्धांतों से अधिक हरिजन वोट बैंक की चिंता है। इसी तरह डॉ. हेडगेवार ने देशभक्ति की जो दस सूत्री कसौटी बताई, उनमें 'व्यक्तिगत आकांक्षाओं से अधिक राष्ट्र की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं को महत्व, समाज एवं राष्ट्र को सर्वोच्च देवी-देवता मानकर उसी की आराधना तथा संपूर्ण समाज में एकात्म भाव' पर सर्वाधिक बल दिया गया। लेकिन सत्ता में पहुंचे स्वयंसेवक नेतृत्व से लेकर जिला स्तर तक क्या व्यक्तिगत आकांक्षाओं का दिन-रात जोड़-तोड़ नहीं कर रहे हैं? सत्ता की बात दूर रही, संघ के प्रति निष्ठा का बखान करने वाले कुछ पहुंचे हुए स्वयंसेवक डॉ. हेडगेवार की जीवनी के निष्ठावान लेखक राकेश सिन्हा को थोड़ा-बहुत महत्व मिलने पर ईर्ष्या भाव से उनके विरुद्ध अभियान नहीं चला रहे हैं? डॉ. हेडगेवार का मानना था कि 'व्यक्तिवाद ने राष्ट्रवाद के भाव को विस्थापित कर दिया है। संघ इसी व्यक्तिवाद को मिटाकर शुद्ध राष्ट्रवाद स्थापित करना चाहता है।' लेकिन संघ की पृष्ठभूमि वाले अधिकांश नेता क्या व्यक्तिवादी राजनीति नहीं कर रहे हैं? संघ और डॉ. हेडगेवार की माला जपने वाले कई नेता अब भाजपा, विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल जैसे संगठनों के सहारे 'हिंदू समाज और राष्ट्र' पर राज करने के लिए नए-नए आंदोलन चला रहे हैं लेकिन उन्हें संभवतः डॉ. हेडगेवार पर प्रकाशित नई पुस्तक से यह पता चलेगा कि 'डॉ. हेडगेवार आस्तिक थे लेकिन नियमित मंदिर जाने वालों में नहीं थे।' उनका मानना था कि 'सार्वजनिक जीवन में शुद्ध मन से, सच्चे हृदय से समाज सेवा ही वास्तविक पूजा होती है।' वह पूजा पाठ को गलत नहीं मानते थे, परंतु भाव एवं कर्मविहीन पूजा पाठ तो कर्मकांड बन जाता है। तभी तो उन्होंने धर्मग्रंथों का नित्य पाठ करने वाले हिंदुओं द्वारा समाज एवं राष्ट्र के प्रति विमुख रहने को समाज के पतन के कारणों में एक माना। लेकिन इस समय संघ के ही कुछ स्वयंसेवक मंदिर या पूजा के नाम पर बड़े-बड़े आंदोलन चला रहे हैं। डॉ. हेडगेवार ने तो संघ की शाखाओं में हनुमान की मूर्ति रखा जाना ही बंद करा दिया। लेकिन अब राजनीति मूर्ति स्थापना और मंदिर तक सीमित होती जा रही है। उन्होंने अपने जीवनकाल में आक्रामक हिंदुत्व की पक्षधर 'राम सेना' का विरोध किया। लेकिन अब प्रवीण तोगड़िया और नरेंद्र मोदी जैसे स्वयंसेवक आक्रामक हिंदुत्व की धारा को ही आगे बढ़ा रहे हैं। राजनीतिक तथा निजी स्वार्थ में डूबे स्वयंसेवकों को क्या सही अर्थों में डॉ. हेडगेवार का उत्तराधिकारी कहा जा सकता है? पद-प्रतिष्ठा पाने वाले जो स्वयंसेवक ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और चरित्र को कोई महत्व नहीं देना चाहते, उनके बल पर 'आधुनिक भारत के निर्माता' के सपनों के अनुरूप समाज और राष्ट्र का उत्थान कैसे होगा? ●